RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-05
May-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

गांधी चिंतन में निहित वैश्विक दृष्टि

मिश्रा अर्चना

एसोसिएट प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, एस. एस. डी. पी. सी. महिला पी. जी. कालेज रूड़की, हरिद्वार, उत्तराखंड

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 25 May 2019

Keywords
सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, सामाजिक न्याय, सतत विकास।

***Corresponding Author**
Email: archananks1[at]gmail.com

ABSTRACT

महात्मा गांधी का विलक्षण व्यक्तित्व और विचार आज लगभग एक शताब्दी के बाद भी वर्तमान विश्व में अपनी उपादेयता बनाए हुए हैं। किसी भी वैचारिक दार्शनिक चिंतन की उपयोगिता इस बात पर निर्भर है कि मानव जगत की व्यावहारिक समस्याओं के निराकरण में वह किस सीमा तक सक्षम है। इस दृष्टिकोण से देखें तो गांधी चिंतन में निहित दृष्टि एवं विचार देश और काल की सीमाओं से परे एक सार्वभौमिक चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने एक युद्ध रहित विश्व, जाति व वर्ग रहित प्रचुरता एवं समृद्धि युक्त समाज, बंधुआ मजदूरी व शोषण से मुक्त खेत–कारखाने, समाजोपयोगी सार्वभौम शिक्षा और प्रकृति के सिद्धांतों पर आधारित आर्थिक व्यवस्था का स्वप्न देखा था। राजनीति, समाज शास्त्र, अर्थ शास्त्र आदि मानव जीवन का कोई भी पहलू उनके चिंतन से अछूता नहीं रहा। गांधी के 150 वर्षों बाद भी उनके विचार वर्तमान विश्व की अनेक समस्याओं के संदर्भ में प्रासंगिक हैं। वस्तुतः इन तमाम वर्षों में व्याख्या–पुर्नव्याख्या की लगातार चलती प्रक्रिया से गुजर कर विश्व में उनके विचारों की स्वीकार्यता निरंतर बढ़ी है।

गांधी – एक विलक्षण व्यक्तित्व एवं शाश्वत मानवीय मूल्यों के प्रणेता :

'मेरा जीवन ही मेरी वाणी है' कहने वाले गांधीजी का व्यक्तित्व एवं विचार उनके जीवन काल में तो समस्त विश्व में चर्चा का विषय रहे ही, वर्तमान विश्व की अनेक ज्वलंत समस्याओं के संदर्भ में आज भी प्रासंगिक हैं। महात्मा गांधी न तो एक दार्शनिक थे जिन्होंने एक विस्तृत सूत्रबद्ध दर्शन प्रस्तुत किया हो, न ही वे एक राजनीतिज्ञ थे जिन्होंने राजनीति को कर्मक्षेत्र मानकर नेता की भूमिका निभाई हो और न ही वे एक संत थे जिन्होंने जगत को मिथ्या मान ब्रह्म में लीन होने को ही जीवन का परम लक्ष्य मानकर जीवन जिया हो। किंतु कितनी विचित्र बात है कि वे यह सब कुछ न होते हुए भी यही सब कुछ थे। उनकी व्यस्त दिनचर्या में अपने जीवन दर्शन को व्यवस्थित रुप देने का अवकाश नहीं था किन्तु उनकी धारणाएं और विश्वास जो सिद्धांत बनने से पहले उनके आचरण में उतरे, किसी दर्शन से कम नहीं हैं। राजनीतिज्ञ न होते हुए भी अपने सम्पूर्ण जीवन काल में वे देश और विदेश की राजनीति के केंद्र में रहे। संसार से विरक्त संत वे नहीं थे परंतु उनका सादगीपूर्ण, आडंबर रहित जीवन किसी संत से कम नहीं था। उनके विचारों का लोगों ने समर्थन किया, आलोचना भी भरपूर की पर प्रेम और श्रद्धा जितनी उन्हें मिली उतनी शायद ही विश्व में किसी एक व्यक्ति को मिली हो क्योंकि उनके प्रखर विरोधी भी एक व्यक्ति के रूप में उन्हें प्रेम करते थे।

ब्रिटिश शासन की अन्याय पूर्ण नीतियों के प्रतिकार के लिए गांधी की अहिंसक पद्धति के प्रयोग और सफलता से समस्त विश्व परिचित है। अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में अहिंसा का प्रयोग भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू ने भारत की विदेश नीति निर्धारित करते समय पंचशील के सिद्धांत को आधार बनाकर किया। यदि वह सफल नहीं रहा तो इसका कारण सैद्धांतिक क्षीणता नहीं वरन् राष्ट्रों की दुर्बलता था। व्यापक गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी पर्यावरण प्रदूषण का चिंतनीय स्तर तो आज विश्व की चिंता के केन्द्र में हैं ही, इसके साथ ही पिछली सदी में दो महायुद्धों से गुजर चुका क्षत–विक्षत विश्व आज भी देशों के बीच संघर्ष के अतिरिक्त दिनोंदिन अधिक क्रूर और बर्बर होते जा रहे आतंकवाद की विभीषिका झेल रहा है। शांति की चर्चा सर्वव्यापी है फिर भी विश्व शांति की स्थापना आज भी एक स्वप्न है। ऐसे वातावरण में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी गांधी के अहिंसा और सत्याग्रह संबंधी विचारों के चमत्कारिक प्रभाव को नेल्सन मंडेला, बराक ओबामा सहित अनेक राष्ट्राध्यक्षों ने मुक्त कंठ से अनेक अवसरों पर स्वीकारा है।

गांधी चिंतन – वैचारिक संदर्भ :

गांधी चिंतन पर पूर्वी व पश्चिमी दोनों स्त्रोतों का प्रभाव पड़ा। महात्मा गांधी की प्रेरणा का प्रमुख स्रोत भगवद्गीता थी। पातंजलि योगसूत्र, रामचरित मानस, महाभारत तथा कुछ बौद्ध और जैन धार्मिक व्याख्याओं ने उनके विचारों को प्रभावित किया। सत्य और अहिंसा के पाठ उन्होंने इन्हीं ग्रंथों से सीखे। 'सर्मन आन द माउन्ट' जैसे अहिंदू ग्रंथों की शिक्षाओं का भी उनपर प्रभाव पड़ा जिसमें वे गीता से बहुत समानताएं देखते थे। लाओत्से के अनाग्रही दर्शन व कंफ्यूशियस की शिक्षाओं ने भी उनके नैतिक–राजनैतिक दर्शन पर गहरा प्रभाव छोड़ा। इस्लाम से भी उन्होंने अहिंसा की शिक्षा ली। कुछ धर्मनिरपेक्ष लेखकों जैसे थारू, रस्किन तथा टॉलस्टॉय आदि के विचारों ने गांधी जी के चिंतन को मानव वादी दृष्टिकोण देने का कार्य

RRIJM 2015, All Rights Reserved

किया। रस्किन की प्रसिद्ध पुस्तक 'Unto this last' के दक्षिण अफ्रीका में अनुवाद करने के दौरान 'सर्वोदय ' की अवधारणा तथा टॉलस्टॉय से ग्रामीण पुनरुत्थान, विकेंद्रीकरण तथा सत्याग्रह के विचार को लिया। टी. एच. ग्रीन (ब्रिटिश आदर्शवादी विचारक), हॉबस लॉक (उदारवादी विचारक), रूसो (फ्रांसीसी विचारक), बेंथम तथा मिल आदि अनेकों पश्चिमी प्रबुद्ध विचारकों ने भी गांधी दर्शन के विकास में योगदान दिया।

महात्मा गांधी हिंदू धर्म के अनुयायी थे और हिंदू धर्म को समस्त धर्मों का सार मानते थे किन्तु उनका स्पष्ट मत था कि धर्म एक बेहद व्यक्तिगत विषय है। इसका राज्य से कोई लेना देना नहीं होना चाहिए। सर्व धर्म समभाव और सामाजिक सौहार्द्र के प्रबल पक्षधर गांधीजी का मानना था कि मात्र किसी धर्म विशेष का अनुयायी होना व्यक्ति को धर्म निरपेक्षता की अवधारणा से अलग नहीं करता। महात्मा गांधी विकास व आधुनिकता की पश्चिमी अवधारणा से सहमत नहीं थे परन्तु जहां उन्होंने एक ओर पश्चिमी उपभोक्तावाद, भौतिकतावाद, तकनीकी विकास व यंत्रीय विवेक के सिद्धांत, ऐलोपैथिक चिकित्सा पद्धति की निंदा की वहीं दूसरी ओर पश्चिमी दर्शन के कई पहलुओं जैसे मानवाधिकार, मानव मात्र की बुनियादी समानता, लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व, लोक हितकारी व दबाव मुक्त शासन आदि सिद्धांतों को स्वीकार भी किया। वैश्विक विचारों एवं नीतियों के प्रति खुली सोच रखने के उपरांत भी उनका दृढ़ विश्वास था कि किसी भी देश का सर्वोत्तम व सम्पूर्ण विकास उसकी अपनी संस्कृति और परंपरागत मूल्यों के अनुरूप ही हो सकता है। महात्मा गांधी के विशद अध्ययन ने उनके विचारों में सार्वभौमिकता के तत्व का समावेश किया। उनके चिंतन में निहित वैश्विक–दृष्टि का संक्षिप्त अनुलेखन निम्नांकित कतिपय बिंदुओं में समाहित है ––

1. गांधीजी एवं मानवाधिकार – युगपुरुष के रूप में प्रतिष्ठित महात्मा गांधी मानवाधिकारों के संरक्षण की दिशा में कार्य करने वाले अग्रणी नेता माने जाते हैं। वर्ष 1893 में दक्षिण अफ्रीका में प्रथम श्रेणी के डिब्बे में यात्रा करने के दौरान पीटरमैरित्जबर्ग में रेलगाड़ी से बाहर फेंके जाने की ऐतिहासिक घटना ने उन्हें यह सोचने को मजबूर किया कि सिर्फ रंग या नस्ल के आधार पर किसी भी सभ्य समाज में मनुष्य को समानता के अधिकार से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। प्रारंभ में दक्षिण अफ्रीका और बाद में भारत में उन्होंने ऐसे करोड़ों लोगों के लिए एक नये युग का सूत्रपात किया जो बुनियादी मानवोचित अधिकारों से वंचित थे। उन्होंने शोषित मानवता के निर्भय होकर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करने के लिए संगठित आंदोलनों की बुनियाद रखी। भारत में उन्होंने विभिन्न सामाजिक उद्देश्यों जैसे अस्पृश्यता का विरोध, मंदिरों में हरिजनों के प्रवेश को स्वीकार्यता आदि अनेक राष्ट्रव्यापी आंदोलनों का नेतृत्व किया जो आधुनिक विश्व में मानवाधिकारों के इतिहास में मील का पत्थर हैं।

उनके दक्षिण अफ्रीका के 21 वर्षों के प्रवास और तत्पश्चात भारत के सामाजिक – राजनीतिक जीवन में 30 वर्षों के अनुभव व कार्यों से विश्व के विभिन्न भागों में मानवीय गरिमा और अधिकारों की स्थापना व संरक्षण की दिशा में नये विचारों व रणनीतियों का विकास हुआ। भारत का उपनिवेशवादी शोषण के विरुद्ध अहिंसक राष्ट्रीय आंदोलन तो विश्व में एक मिसाल बन चुका है जिसका प्रभाव देश की सीमाओं के पार भी अन्याय के विरुद्ध संघर्ष के सशक्त उपाय के रूप में मान्यता प्राप्त कर चुका है। नस्ल आधारित विभेदीकरण के विरुद्ध संघर्ष में दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला व अमरीका में अश्वेतों के संघर्ष का नेतृत्व करने वाले मार्टिन लूथर किंग जूनियर प्रमुख हैं जिनके प्रेरणास्रोत गांधीजी ही थे। तमाम हिंसक संघर्षों के मध्य घिरे विश्व में आज भी दुनिया भर के चिंतक और विचारक संसार को बेहतर बनाने के प्रयासों में कहीं न कहीं गांधी से जुड़ाव महसूस करते हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा के विभिन्न अनुच्छेदों में महात्मा गांधी के विचारों का पर्याप्त प्रभाव परिलक्षित होता है।

2. सत्य और अहिंसा – सत्य और अहिंसा गांधीजी के चिंतन के केन्द्र में थे। उन्होंने सत्य और अहिंसा को एक ही सिक्के के दो पहलू मानते हुए कहा कि सत्य ही ईश्वर है और अहिंसा भी प्रकारांतर में ईश्वरीय साक्षात्कार की ही स्थिति है। गांधीजी के मत में बुरे विचार ही हिंसा हैं और सद्विचार एवं पारस्परिक सहिष्णुता ही अहिंसा है। कर्तव्यपरायणता, मैत्री, प्रेम और क्षमा को उन्होंने अहिंसा का ही अंग माना। गांधी जी ने विश्वस्तर पर हिंसा के विभिन्न घातक दुष्परिणामों का भरपूर अध्ययन किया था अतः सामाजिक परिवर्तन हेतु उन्होंने संघर्ष की अहिंसक पद्धति की खोज की। उनके अनुसार 'जीवन के लिए संघर्ष' की पश्चिमी अवधारणा से कहीं बेहतर सिद्धांत है 'जीवन के लिए सहयोग' जिसपर अमल करने के लिए प्रेम, सहयोग और भ्रातृत्व–भाव की आवश्यकता होती है। उनका मानना था कि इन स्वाभाविक मानवीय मूल्यों की अनदेखी के कारण ही आज सर्वत्र पारस्परिक द्वेष और अविश्वास का वातावरण है।

महात्मा गांधी के अनुसार हिंसा के दो रूप हैं–शोषण तथा प्रत्यक्ष युद्ध। समाज में अन्याय, अभाव व शोषण चाहे कहीं भी किसी भी रूप में हो, अंततः आक्रोश, अशांति और संघर्ष को ही जन्म देते हैं। अन्याय के अहिंसक प्रतिरोध की 'सत्याग्रह' पद्धति को उन्होंने निष्क्रिय नहीं वरन् अधिक सशक्त व सक्रिय प्रतिरोध मानते हुए कहा कि यह दुर्बल का अस्त्र नहीं है क्योंकि शारीरिक शक्ति व उसके माध्यम से किये गये प्रतिरोध की तुलना में इसका प्रयोग अधिक प्रबल मानसिक दृढ़ता की मांग करता है। इसके पीछे शारीरिक नहीं बल्कि सत्य की प्रखर शक्ति कार्य करती है। वर्तमान विश्व में अहिंसा का मूल्य और भी बढ़ जाता है। दुनिया के अनेक देश आज

भयंकर मारक शस्त्रास्त्रों की होड़ एवं एक दूसरे के प्रति आशंका, अविश्वास और भय के वातावरण में जी रहे हैं। इन परिस्थितियों में दुनिया आज यह स्वीकार कर रही है कि गांधी चिंतन में समाहित प्राचीन भारतीय मनीषियों के 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'आत्मवत सर्वभूतेषु' के स्वर्णिम सूत्र ही मानवजाति को भावी युद्ध की विभीषिका से बचा सकते हैं।

3. पर्यावरण एवं सतत विकास – गांधीजी का पूरा जीवन और कार्य पर्यावरणीय संरक्षण का ज्वलंत उदाहरण है। पर्यावरण एवं विकास के संबंध में उनके विचार अपने समय से बहुत आगे थे। गांधी जी द्वारा स्थापित सामुदायिक आश्रम जीवन में कृषि, वृक्षारोपण तथा सादगीपूर्ण एवं श्रम आधारित जीवन शैली का समावेश था। गांधी जी अंधाधुंध शहरीकरण और औद्योगीकरण के विरुद्ध थे क्योंकि उनके अनुसार इससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के मध्य परिस्थितिकीय असंतुलन पैदा हो सकता है। उनका स्पष्ट मत था कि धरती के संसाधन सम्पूर्ण मानवता के लिए ईश्वरीय उपहार हैं और आने वाली पीढ़ियों को ध्यान में रखकर ही उनका उपयोग किया जाना चाहिए। विज्ञान व प्रौद्योगिकी मानव सभ्यता के विकास का अनिवार्य अंग जरूर हैं परन्तु यदि पृथ्वी और मानव के अस्तित्व को सुरक्षित रखना है तो इनका सुनियोजित एवं नियंत्रित प्रयोग किया जाना चाहिए। सारे विश्व के पर्यावरणविद् व वैज्ञानिक आज गांधीजी के इस विचार से सहमत हैं कि तकनीकी विकास व औद्योगीकरण अपने वर्तमान स्वरूप में लम्बे समय तक जारी नहीं रखा जा सकता। प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से न सिर्फ मानव जीवन पर दबाव बढ़ रहा है बल्कि पृथ्वी के अस्तित्व पर भी संकट है। ग्लोबल वार्मिंग और इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न जलवायु परिवर्तन तथा अनेक प्राकृतिक आपदाएं इसी आसन्न खतरे की चेतावनी हैं। पर्यावरणीय चिंताओं से संबंधित विश्वप्रसिद्ध 'नर्मदा बचाओ आंदोलन' व वृक्षों को बचाने के लिए किये गये 'चिपको आंदोलन' गांधीजी के विचारों व तरीकों के सर्वाधिक रचनात्मक एवं कारगर प्रयोग हैं।

आज जब विश्व समुदाय सतत विकास की अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए आर्थिक, सामाजिक व पर्यावरणीय मोर्चों पर गंभीरतापूर्वक सामूहिक मंथन कर रहा है तो गांधीजी का प्रसिद्ध कथन "प्रकृति के पास प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकताओं के लिए पर्याप्त संसाधन हैं पर मनुष्य के लालच को पूरा करने के लिए नहीं" आज भी अपनी सार्थकता सिद्ध कर देता है।

4. सामाजिक न्याय, समानता एवं स्वतंत्रता – महात्मा गांधी मानते थे कि हर मनुष्य समान और स्वतंत्र है। समकालीन समाज में व्याप्त सामाजिक भेदभाव व आर्थिक विषमताएं उन्हें अत्यंत उद्विग्न करती थीं। अतः वे आजीवन समाज के वंचित व दुर्बल वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करते रहे। गांधी जी ने भौतिक प्रगति की सीमाओं और इसके मूल में निहित शोषण के बीजों का अनुमान अपनी दूरदृष्टि से लगा लिया था, इसी कारण वे विकास के पश्चिमी मानकों को गैरजरूरी मानते थे। उनकी स्पष्ट सोच थी कि भौतिकतावाद ही अंततः उपनिवेशवाद को जन्म देता है। लाभ केन्द्रित पूंजीवादी व्यवस्था को वे श्रमिक शोषण का मूल मानते थे। वे मानते थे कि यदि पूंजी शक्ति है तो श्रम भी शक्ति है और दोनों परस्पर पूरक हैं। अतः उन्होंने पूंजीपतियों का ट्रस्टीशिप का सिद्धांत अपनाने के लिए आह्वान किया जिससे वर्गभेद आधारित संघर्ष को बढ़ावा न मिले तथा अहिंसक तरीके से पूंजीपति नहीं पूंजीवाद को समाप्त किया जा सके। यद्यपि उनके इस प्रयास को राष्ट्रीय स्तर पर सीमित सफलता ही मिली और जमनालाल बजाज, जे. आर. डी. टाटा जैसे कतिपय उद्योगपति ही इस अवधारणा से जुड़े लेकिन सामाजिक न्याय प्राप्त करने और शोषण मुक्त समाज की स्थापना हेतु उनका ट्रस्टीशिप का विचार आज भी प्रासंगिक है।

गांधी जी को आभास था कि पूर्णरूपेण वर्गहीन समाज की स्थापना एक असंभव सा कार्य है अतः उनकी व्याख्या में वर्गहीनता का अर्थ वर्गों को मिटाना नहीं वरन् समृद्ध और सर्वहारा वर्ग के संबंधों में इस प्रकार का सहयोग और स्वस्थ संबंध विकसित करना था कि वर्ग चेतना ही अनावश्यक और क्षीण हो जाये। इसी सोच का परिणाम उनके द्वारा श्रम की गरिमा को प्रतिष्ठित करने के प्रयास थे ताकि हर प्रकार के श्रम की महत्ता स्थापित हो सके। आर्थिक ढांचे में अस्तेय, अपरिग्रह व स्वदेशी का समावेश तथा विकेन्द्रीकृत शासन व्यवस्था का समर्थन उनकी सामाजिक न्याय व समानता प्राप्त करने के उद्देश्य की कार्ययोजना का ही हिस्सा थे। 'सर्वोदय' गांधीजी के मानवतावाद की पराकाष्ठा है। मानव समाज की समानता एवं स्वतंत्रता में उनकी अडिग आस्था से प्रभावित होकर प्रमुख ईसाई विचारक सी. एफ. एंड्रयूज दक्षिण अफ्रीका आंदोलन के समय से ही उनके प्रबल समर्थक बन गये थे।

5. लैंगिक समानता एवं नारी सशक्तीकरण – महात्मा गांधी स्त्रियों की सामाजिक–राजनीतिक मुक्ति के उद्घोषक तथा महिला अधिकार व समानता के सबसे बड़े समर्थकों में से हैं। गांधी जी ने भारत में प्रथम नारीवादी आंदोलन का प्रारंभ किया। उन्होंने महिलाओं को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़कर राष्ट्र के सम्मान व स्वतंत्रता प्राप्त करने के कार्य में सहभागिता का आह्वान किया। उनके आह्वान पर आगे आने वाली प्रथम महिला उनकी धर्मपत्नी कस्तूरबा थीं। उनकी प्रेरणा से स्वतंत्रता आंदोलन व अन्य सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सक्रिय योगदान देने वाली नारियों की संख्या कम नहीं है। उनकी सहयोगी रही श्रीमती सरोजनी नायडू, श्रीमती एनी बेसेंट, श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित, श्रीमती कमला नेहरू, अरुणा आसफ अली, सुशीला नैयर जैसी नारियों के प्रखर

व्यक्तित्व व कृतित्व आज भी सारी नारी जाति के प्रेरणा स्त्रोत हैं।

गांधीजी ने तत्कालीन समाज में स्त्रियों के शोषण व प्रताड़ना के मूल में व्याप्त अनेक सामाजिक कुरीतियों जैसे दहेज प्रथा, बाल विवाह, बहुविवाह आदि के विरोध में आंदोलन संचालित किये। मद्य की दुकानों को महिलाओं के सत्याग्रह द्वारा बंद करवाया व नशे की हालत में घर आये पति के लिए द्वार न खोलकर विरोध करने का साहस दिया। उनके अनुसार समाज में नारी को समानता का दर्जा मिले इसमें शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षित महिला ही आत्मनिर्भर हो सकती है तथा एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ राष्ट्र एवं समाज की मुख्यधारा से जुड़कर राष्ट्र निर्माण में सार्थक योगदान दे सकती है।

वर्तमान विश्व में महिलाओं के प्रति हिंसा एक विश्वव्यापी प्रवृति है। कोई भी देश, समाज या समुदाय इससे मुक्त नहीं है। महिलाओं के प्रति बढते अपराधों एवं हिंसात्मक व्यवहार को देखते हुए वैश्विक स्तर पर अनेक संस्थायें व कानून निर्मित किये गये हैं तथा लगातार इस दिशा में प्रयास जारी हैं। यह गांधीजी की सम्यक सोच एवं दूर दृष्टि ही थी कि लगभग शताब्दी पूर्व के उनके लैंगिक समानता व नारी सशक्तीकरण विषयक विचार आज के परिवेश में भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि महात्मा गांधी एक उच्च स्तर के चिंतक एवं विचारक थे परन्तु उन्होंने कोई सूत्रबद्ध मंतव्य प्रचारित नहीं किया। अपने जीवन को उन्होंने 'सत्य के प्रयोग' के तौर पर देखा। उनका सारा जीवन निरंतर प्रयास और परीक्षण द्वारा सत्य के साक्षात्कार की चेष्टा है। मानव तत्व सदैव उनके चिंतन केन्द्र में रहा और उसे प्रभावित करने वाला कोई भी क्षेत्र व्यक्तिगत, सामाजिक, आर्थिक अथवा राजनीतिक उनके वैचारिक दायरे से अछूता नहीं रहा। मानव सभ्यता के विकास की राह में साध्य क्या हो और साधन क्या, यंत्रीकरण, मानवीय श्रम और विकास के मध्य संतुलन के मानक, धर्म व राजनीति के परस्पर संबंध आदि मुद्दों के साथ साथ व्यापक गरीबी, आर्थिक असमानता, वर्ग भेद आधारित शोषण, प्रकृति के संसाधनों का असामान्य दोहन जैसी समस्याओं के संबंध में उनकी स्पष्ट सोच व समाधान थे। अहिंसा के प्रबल समर्थक होते हुए भी वे मानते थे कि गीता हमें श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए निष्काम भाव से अस्त्र प्रयोग की शिक्षा देती है। उनकी स्वदेशी की अवधारणा भी कहीं से संकीर्ण और विश्व विरोधी नहीं थी। उनका कहना था कि 'मेरी भौतिक जरूरतों के लिए मेरा गांव मेरी दुनिया है और मेरी आध्यात्मिक जरूरतों के लिए पूरा विश्व मेरा गांव है'। अर्थात् गांधीजी के स्वदेशी का अर्थ स्थानीय संसाधनों पर आधारित जीवन शैली विकसित करने की रणनीति है।

मानवता की चिंताओं से जुड़े रहने के कारण गांधी–चिंतन का स्वरूप वैश्विक हो गया है। दरअसल गांधी एकसाथ 'स्थानीय' और 'सार्वभौम' दोनों थे तभी वे विश्व को एक सर्वथा मौलिक और कालजयी चिंतन दे सके।

संदर्भ स्त्रोत :

- कालेलकर, काका साहेब, 'गांधी दर्शन', कॉलेज बुक डिपो, जयपुर, 1972
- शर्मा, वीरेन्द्र, 'भारत के पुनर्निर्माण में गांधी जी का योगदान', श्री पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1984
- कालेलकर, काका साहेब, 'अहिंसा, जीवन संस्कृति की नई दिशा', साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, 1995
- वर्मा, आनंद स्वरूप, 'दक्षिण अफ्रीका : गोरे आतंक के खिलाफ काली चेतना', नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद, 1996
- कुमार, जैनेंद्र, 'अकालपुरुष गांधी', पूर्वोदय प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
- सक्सेना, रमेश, 'गांधी एक अध्ययन', विश्वभारती पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, 2009
- सिन्हा, मनोज (संपा.), 'गांधी अध्ययन', ओरियंट ब्लैकस्वान प्राइवेट लिमिटेड, नयी दिल्ली, 2010
- Asha Rani, 'Gandhian Non-Violence and India's Freedom Struggle,' Shree Publishing House Delhi, 1981
- गुहा, रामचंद्र, 'गुरुदेव और महात्मा के मतभेद का मर्म', (लेख), हिन्दुस्तान, 13 सितंबर 2008